

कनान की विजय

एड्रियन ईबेन्स
केविन जे. मुलेंस



कनान की विजय

एड्रियन एबेंस
केविन जे. मुलिंग्स

द्वारा मुद्रित



adrian@life-matters.org

July, 2020

सामग्री

वास्तविकता का सामना करना.....	5
एक गंभीर मुद्दा जिसका सामना सभी को करना चाहिए.....	7
शैतान का ईश्वर के चरित्र पर गलत प्रतिनिधित्व.....	9
ईश्वर का मूल योजना: कनान पर कब्जा.....	12
इस्राएल का ईश्वर से भय.....	13
अमालेक के साथ निर्णायक मोड़.....	14
विरासत में मिली तलवार.....	16
जो भी प्रभु ने कहा है, हम करेंगे ।.....	23
चालीस साल बाद.....	25
मूसा अवज्ञा में शिला पर मारता है.....	27
इजराइल एक वचन लेता है.....	28
ईश्वर इजराइल को वही देता है जो वे चाहते हैं.....	30
भय की मूर्ति को छोड़ना.....	33
बिना करुणा का न्याय.....	35
यीशु के प्रकाश में ईश्वर को देखना.....	38

वास्तविकता का सामना करना

व्यवस्थाविवरण 2:34 और उस समय हम ने उसके सब नगरों पर कब्ज़ा कर लिया, और हर नगर के पुरुषों, स्त्रियों, और बालकों को विनष्ट कर दिया, और किसी को भी न छोड़ा:

तुम्हारे मन में भय के कंपन के बिना शास्त्र के ऐसे अंशों को पढ़ना कठिन है। जबकि कुछ लोग युद्धरत पुरुषों के वध को सही ठहराने का एक तरीका खोज लेते हैं, एक इजरायली सैनिक को अपनी तलवार के छोर पर एक छोटे बच्चे के साथ चित्रित करना अकल्पनीय है। मैं आपके बारे में नहीं जानता, लेकिन मेरे लिए यह पूरी तरह से घृणा की भावना लाता है। जो बात इसे और भी बदतर बनाती है वह यह है कि ऐसा प्रतीत होता है कि बाइबल न केवल इन कार्यों को क्षमा करती है, बल्कि उन्हें आज्ञा देती है।

व्यवस्थाविवरण 7:2 और जब तेरा परमेश्वर यहोवा उन्हें तेरे सम्मुख छुड़ाएगा, तो तू उन्हें मार डालेगा, और उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर देगा; तू उनके साथ कोई वाचा न करना, और न उन पर दया करना।

यहोशू 11:12 और यहोशू ने उन राजाओं के सब नगरों को, और उनके सब राजाओं को, ले लिया, और उन्हें तलवार की धार से मार डाला। और जैसा यहोवा के दास मूसा ने आज्ञा दी थी, वैसा ही उन्होंने उन्हें नाश कर दिया।

यहोशू 10:40 इस प्रकार यहोशू ने पहाड़ों के सारे देश, और दक्षिण के, और घाटी के, और झरनों के, और उनके सभी राजाओं को मार डाला। उसने किसी को भी नहीं छोड़ा, बल्कि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार सब कुछ नष्ट कर दिया।

यह तर्क दिया गया है कि शब्द पूरी तरह से नष्ट करने का मतलब यह नहीं है कि हम क्या सोचते हैं (अन्य स्थानों में इसे प्रतिबंध कहा जाता है) अगर लोगों के एक समूह को पूरी तरह से मानचित्र से मिटा दिया गया था, तो आप उनके साथ अंतर्विवाह न करने का आदेश क्यों देंगे?

व्यवस्थाविवरण 7:2-4 और जब तुम्हारा परमेश्वर यहोवा उन्हें तुम्हारे सम्मुख छुड़ाएगा, तो तुम उन्हें मार डालो और उन्हें पूरी तरह से नष्ट कर दो; तुम उनके साथ कोई वाचा नहीं करोगे, और न ही उन पर दया करोगे: (3) **न तो तुम उनके साथ विवाह करोगे; न तो अपनी बेटी को अपने बेटे को दोगे, न ही उसकी बेटी को अपने बेटे को दोगे।** 4 क्योंकि वे तेरे बेटे को मेरे पीछे आने से रोकेंगे, कि वे अन्य देवताओं की सेवा करें; इस प्रकार यहोवा का क्रोध तेरे विरुद्ध भड़क उठेगा, और वह अचानक तेरा नाश कर देगा।

इस स्पष्ट विरोधाभास को इस समझ से हल किया जा सकता था कि इस्राएल को एक शहर में शांति की घोषणा करने का आदेश दिया गया था, और अगर वे शांति स्थापित करते हैं तो शहर को इस्राएल के लिए सहायक बनाया जाना था और उनकी मूर्तियों और पूजा प्रणाली को नष्ट किया जाना था।

व्यवस्थाविवरण 20:10-11 जब तू किसी नगर के विरुद्ध लड़ने के लिये उसके निकट पहुंचे, तो उसके लिये शान्ति की घोषणा कर। 11. और यदि वह तुम्हें शान्ति का उत्तर दे और तुम्हारे लिये खुले, तो जो लोग उस में पाए जाएंगे, वे सब तुम्हारे सहायक होंगे, और वे तेरी सेवा करेंगे।

व्यवस्थाविवरण 7:5 परन्तु तुम उनके साथ ऐसा व्यवहार करना; तुम उनकी वेदियों को नष्ट करना, और उनकी मूर्तियों को तोड़ना, और उनके उपवनों को काटना, और उनकी मूर्तियों को आग से जलाना।

फिर भी अगर हम इन बिंदुओं की अनुमति देते हैं, तो भी यह मसीह की शिक्षा से बहुत कम है।

मत्ती 26:52 तब यीशु ने उस से कहा, अपनी तलवार उसके स्थान पर फिर से रख दे. क्योंकि वे सब जो तलवार पकड़ते हैं, तलवार से नाश हो जाएंगे।

लूका 9:54-56 और उसके चेलों याकूब और यूहन्ना ने यह देखकर कहा, हे प्रभु, क्या तू चाहता है कि हम आकाश से आग उतराकर उन्हें भस्म करने की आज्ञा दे, जैसा एलिय्याह ने किया था? 55 परन्तु उस ने मुड़कर उन को डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम किस मन के हो। (56) क्योंकि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के प्राणों को नाश करने नहीं, वरन् उनका उद्धार करने आया है। और वे दूसरे गाँव चले गए।

एक गंभीर मुद्दा जिसका सामना सभी को करना चाहिए

यह वास्तव में कोई आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि परमेश्वर के चरित्र को समझने के मुद्दे में स्वर्गदूत के साथ याकूब की कुश्ती द्वारा चित्रित मन की कुश्ती शामिल होनी चाहिए। याकूब उस व्यक्ति की पहचान नहीं कर सका जिसके साथ उसने कुश्ती की थी। उसने सोचा कि स्वर्गदूत उसका दुश्मन था जिसे उसे नष्ट करने के लिए भेजा गया था, जबकि वास्तव में यह उसका प्यार करने वाला उद्धारकर्ता था जिसे उसे बचाने के लिए भेजा गया था।

उत्पत्ति 32:24-30 याकोब अकेला रह गया; और उसके साथ एक आदमी लड़ाई करता रहा जब तक कि प्रभात न हो गया। (25) और जब वह देखा कि वह उसके विरुद्ध विजय प्राप्त नहीं कर पा रहा है, तो उसने उसके जाँघ के फंडे को छू लिया; और याकोब के जाँघ का फंडा उसके साथ लड़ते-लड़ते उखड़ गया। (26) और उसने कहा, छोड़ दे, क्योंकि दिन टूट रहा है। और उसने कहा, मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा, जब तक कि तू मुझे आशीर्वाद न दे। (27) और उसने उससे कहा, तेरा नाम क्या है? और उसने कहा, याकोब। (28) और उसने कहा, तेरा नाम याकोब नहीं रहेगा, बल्कि इस्राएल होगा: क्योंकि ईश्वर और मनुष्यों के साथ तू राजकुमार की तरह शक्तिशाली हुआ है, और विजय प्राप्त की है। (29) और याकोब ने उससे पूछा, और कहा, कृपया मुझे बता, तेरा नाम क्या है? और उसने कहा, तू मेरे नाम के पीछे क्यों पूछ रहा है? और उसने वहीं उसे आशीर्वाद दिया। (30) और याकोब ने उस स्थान का नाम पनयेल रखा: **क्योंकि मैंने ईश्वर का चेहरा चेहरे से देखा है, और मेरा जीवन सुरक्षित है।**

यूहन्ना 1:1, 2, 14, 18 प्रारंभ में वाणी थी, और वाणी ईश्वर के पास थी, और वाणी ईश्वर थी। (2) वही प्रारंभ में ईश्वर के पास था... (14) और वाणी मांस बन गई, और हमारे बीच निवास किया, (और हमने उसकी ज्योति देखी, जो पिता के एकमात्र पुत्र की ज्योति के समान,) कृपा और सत्य से भरपूर... (18) **कभी भी कोई ईश्वर को नहीं देखा है; पिता की छाती में स्थित एकमात्र पुत्र, उसने उसे प्रकट किया है।**

याकोब ने ईश्वर का चेहरा चेहरे से देखा, उसके एकमात्र पुत्र के रूप में, लेकिन उसने इसे तब तक नहीं जाना जब तक कि उसने विजय प्राप्त न की। याकोब ने उस लड़ाई को उठाने का केवल एक कारण था। यीशु मसीह ने उससे पूछा, "तेरा नाम क्या है?" उसने याकोब को अपने नाम की प्रामाणिकता पर लाया, क्योंकि उसका नाम "छलन्द" (धोखेबाज) का अर्थ था। उसने अपने भाई से जन्माधिकार छीना था और अपने पिता को आशीर्वाद दिलाने में धोखा दिया था। अब याकोब इस स्वर्गीय संदेशवाहक से आशीर्वाद मांग रहा था। यीशु मसीह ने याकोब की कूल्हे का फंडा उखड़ा दिया, तो याकोब के हाथ में केवल यह करना था कि वह अपने मुक्तिदाता पर टिके रहे स्थिरता के लिए, जबकि वह इस आशीर्वाद की इच्छा कर रहा था। यहाँ याकोब ने सीखा कि ईश्वर हमेशा कृपामयी हैं, और उसने अपना आत्मा उस कृपा पर न्योछावर कर दिया।

इस प्रकार यीशु मसीह ने याकोब का नाम "इस्त्राएल" रखा, जिसका अर्थ है "विजयी" या "राजकुमार की तरह शक्तिशाली।"

केवल वे लोग ईश्वर की कृपा की यह समझ को अपने पास बनाए रखेंगे जो यीशु मसीह का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए याकोब की तरह लड़ते रहेंगे। जब ओल्ड टेस्टामेंट की कहानियों और न्यू टेस्टामेंट में यीशु मसीह के वचनों के बीच यह स्पष्ट विरोधाभास प्रकट होता है, तो हमारे मन में शैतान द्वारा बोई गई बीज का दरवाजा खुल जाता है कि ईश्वर कृपामयी नहीं हैं। यदि हम सीख नहीं गए हैं कि हमारा पिता कृपामयी हैं और हम उनकी कृपा पर भरोसा कर सकते हैं, तो हमें अपने मुक्तिदाता के साथ एक लंबी लड़ाई का सामना करना पड़ेगा। जो घृणा आत्मा में निवास करती है, वह इन कहानियों को पढ़ते समय प्रकट होगी। रिचर्ड डॉकिन्स, स्टीफन फ्रे और अन्य जैसे लोग शैतान द्वारा उत्पन्न इस कड़वे बीज के प्रमाण देते हैं। यह झूठ है जो ईश्वर को एक क्रूर तानाशाह के रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे कई मानव मनो को उन्हें घृणा करने और अंततः उन्हें मार डालने के लिए प्रेरित करता है। इन नए नास्तिकों का प्रचार कि ईश्वर विवेकहीन, हिंसक और क्रूर हैं, कई लोगों को उनके अस्तित्व पर विश्वास करना पूरी तरह से छोड़ने के लिए मजबूर करता है।

इसके विपरीत, कुछ तेजी से ईश्वर के चरित्र की रक्षा करते हैं कि वे कृपामयी हैं, जैसे हमारी माँ ईव ने की थी, ईश्वर के वचन को जोड़कर। कुछ सार्वत्रिक मोक्ष (universalism) के रूप में धोखे में फंस जाते हैं जो सिखाता है कि सभी को मोक्ष मिलेगा। अन्य उच्च आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं और ओल्ड टेस्टामेंट को "उस समय जो संभव था वह करने" के लिए सौंप देते हैं। किसी भी तरह, शास्त्र की सीधी पठन में विश्वास कमजोर हो जाता है और सर्प अपने धोखे के फंडों से आत्मा को दबाने की इजाजत देता है।

शैतान का ईश्वर के चरित्र पर गलत प्रतिनिधित्व

प्रारंभ से ही शैतान ने ईश्वर के चरित्र का गलत प्रतिनिधित्व किया है।

यूहन्ना 8:43, 44 तुम मेरी बात क्यों नहीं समझ पाते? यह इसलिए कि तुम मेरे वचन को सुन नहीं पाते। (44) तुम अपने पिता शैतान से हो, और अपने पिता की लालसाएँ करोगे। वह प्रारंभ से ही हत्यारा रहा है, और सत्य में नहीं रहा, क्योंकि उसमें कोई सत्य नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपने ही के बारे में बोलता है: **क्योंकि वह झूठी बात का पिता है।**

शैतान का यह योजना रही है कि वह लोगों को ईश्वर को अपने ही गुणों से सजाए, ताकि वे उसे अस्वीकार करें।

पतरस 5:8 चैतन्यवान रहो, चेतावनी बनाए रखो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान, एक गर्जना करते शेर की तरह, घूमता है, और वह खा सकने वाला कोई ढूँढता है।

वही शैतान है जो नष्ट करने और निगलने की इच्छा रखता है। वह अपनी ठगी की शक्ति से हर चीज करेगा ताकि हम ईश्वर की कृपा को अंधे करें और उसे खून प्यासे शासक के रूप में देखें।

यहेजकेल 36:16-21 प्रभु का यह सन्देश मुझे मिला। प्रभु ने मुझसे कहा, 'ओ मानव, जब इस्राएली अपने देश में रहते थे, तब **उन्होंने अपने आचरण और व्यवहार से उसको अशुद्ध कर दिया था।** ऋतुमति स्त्री की अशुद्धता के समान उनका आचरण अशुद्ध था। **उन्होंने अपने देश में हत्याएं की थीं।** मूर्तियों की पूजा कर अपने देश को अशुद्ध किया था। अतः मैंने अपनी क्रोधाग्नि की उन पर वर्षा की। मैंने विश्व के राष्ट्रों में उनको तितर-बितर कर दिया। वे भिन्न-भिन्न देशों में बिखर गए। मैंने उनके आचरण और व्यवहार के **अनुरूप** उनका न्याय किया था। वे जिस-जिस देश में गए, **वहाँ भी उन्होंने मेरे पवित्र नाम को अपवित्र किया।** उस देश के लोग उनके बारे में यह कहते थे, "ये प्रभु के निज लोग हैं, फिर भी उसके देश से इनको निकाल दिया गया।" किन्तु मुझे अपने पवित्र नाम का ध्यान था, **यद्यपि इस्राएलियों ने अपने निष्कासन के देशों में मेरे नाम को अपवित्र किया था।**

जब ईश्वर कहता है, "उन्होंने मेरा पवित्र नाम अशुद्ध किया," तो वह यह नहीं कह रहा है कि वे उसका नाम गलत उच्चारित कर रहे थे। जैसा कि हमने याकोब के मामले में देखा, हिब्रू भाषा में "नाम" का अर्थ "चरित्र" है। वे उसका चरित्र अशुद्ध कर रहे थे, केवल अपनी मूर्तियों से ही नहीं, बल्कि "भूमि पर बहाए गए खून" से भी। ईश्वर हमें बताता है कि उसका नाम क्या है:

निर्गमन 33:18-19 मूसा ने कहा, 'कृपया, मुझे अपनी महिमा के दर्शन करा।' उसने कहा, 'मैं अपनी समस्त अच्छाई तेरे सम्मुख प्रदर्शित करूँगा। तेरे सामने अपना नाम "प्रभु" घोषित करूँगा। जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहूँगा, उस पर अनुग्रह करूँगा। जिस पर मैं दया करना चाहूँगा, उस पर दया करूँगा।'

ईश्वर का नाम (चरित्र) उसकी "अच्छाई" द्वारा प्रकट होता है, क्योंकि वह "कृपामयी" है, और "दया" से भरा हुआ है। ईश्वर ने यह मूसा को बताया क्योंकि उसने ईश्वर की "ज्योति" देखने की गुहन की थी। इस प्रकार ईश्वर की ज्योति उसके पवित्र गुणों का प्रकटीकरण है। यही वह था जिसे इस्राएल का घर अनुभव नहीं कर पाया और दुनिया को नहीं दिखा पाया।

वही शैतान है जो मानवता को लड़ाई और बिना कृपा के हत्या करने के लिए प्रेरित करता है, चाहे लिंग या आयु का ध्यान न रखते हुए। बड़ी परीक्षा यह है कि हम शास्त्र को विश्वसनीय रूप से पढ़ें, उन्हें मोड़ने के बिना, इस वास्तविकता को प्रकट करें। यदि हम गंभीर हैं, तो कभी-कभी हमारे मुक्तिदाता हमारे दुश्मन की तरह महसूस होंगे, जो हमें नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर रहे हैं, पर यदि हम ईश्वर की कृपा को जान चुके हैं, तो हम लगातार लड़ते रहेंगे जब तक कि हम आशीर्वाद प्राप्त न कर लें। यह मेरी गहरी आस्था है कि अगर हम अपने ईश्वर के चरित्र को सही समझें, तो वे लोग जो कभी सत्य को जानने की कोशिश नहीं करते, उन पर शैतान की जीत होने नहीं देंगे। हमें हमारे पिता के चरित्र की सत्य को जानना होगा। यदि हम समय के अंत में उस अंतिम वर्षा के अंतर्गत सील होना चाहते हैं, तो यह बहुत जरूरी काम है। जैसा कि शैतान का पहला काम ईश्वर के चरित्र का गलत प्रतिनिधित्व करना था, वैसा ही दुनिया को दिया गया अंतिम संदेश उसके प्रेम के चरित्र का प्रकटीकरण होगा।

प्रकाशन 18:1 इसके बाद मैंने एक अन्य स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा। वह महान अधिकार से सम्पन्न था और पृथ्वी उसके तेज से प्रदीप्त हो उठी।

यह स्वर्ग से उतरने वाला फरिश्ता ईश्वर के अंतिम दिन के लोगों द्वारा दुनिया को दिए गए अंतिम संदेश का प्रतिनिधित्व करता है। पृथ्वी को उसकी ज्योति से उज्ज्वल होना है। यह ज्योति केवल हमारे स्वर्गीय पिता से आती है। यह ईश्वर की ज्योति (चरित्र) है जो जब उसके लोग दुनिया को उसके प्रेम के सच्चे चरित्र के प्रकटीकरण के कारण अंधकार में लिपटी हुई दुनिया में कृपा के अंतिम संदेश का प्रचार करेंगे, तो पूरी दुनिया को उज्ज्वल करेगी। कई लोग उसके चरित्र को गलत समझ रहे हैं।

यशायाह 40:9-10 ओ सियोन को शुभ सन्देश सुनानेवाली, ऊंचे पर्वत पर चढ़कर सन्देश सुना! ओ यरूशलेम को शुभ सन्देश सुनानेवाली, बल्पूर्वक उच्च स्वर में सुना! मत डर, ऊंची आवाज में सुना।

यहूदा प्रदेश के नगरों में यह प्रचार कर, **“देखो! तुम्हारा परमेश्वर!”** देखो, प्रभु स्वामी सामर्थ्य के साथ आ रहा है, वह अपने भुजबल से शासन करता है। देखो, उसका पुरस्कार उसके साथ है, उसके आगे-आगे उसका प्रतिफल है!

हमें लोगों से कहना होगा, "देखो तुम्हारा ईश्वर!" उसे देखो जैसा कि उसे देखना है – "कृपामयी और क्षमाशील, धीरवान, और अच्छाई और सत्य में भरपूर।" (यहोशुआ 34:6)।

ईश्वर का मूल योजना: कनान पर कब्जा

इस्राएल के कनान पर कब्जे के संबंध में, प्रभु ने उन्हें बताया कि यह कैसे पूरा किया जाएगा:

निर्गमन 23:27-30 मैं तेरे आगे अपना आतंक प्रेषित करूँगा। जिन जातियों पर तू आक्रमण करेगा, उनको मैं भयाकुल करूँगा। तेरे पास से समस्त शत्रुओं को पलायन करने के लिए विवश करूँगा। मैं तेरे आगे बर्रे भेजूँगा और वे हिव्वी, कनानी तथा हित्ती जातियों को तेरे सम्मुख से निकाल दूँगे। मैं उन्हें एक ही वर्ष में तेरे सम्मुख से नहीं निकालूँगा, अन्यथा तेरा देश उजाड़ हो जाएगा और वनपशु बढ़ जाएंगे और वे तेरी हानि करेंगे। जब तक तू बढ़कर समस्त देश पर अधिकार न कर ले तब तक मैं उन्हें थोड़ा-थोड़ा करके तेरे सम्मुख से निकालता रहूँगा।

यहाँ किसी तलवार के उपयोग का जिक्र नहीं है। इस्राएल मिस्र से बच गया था और एक भी तलवार के उपयोग के बिना मिस्रियों को पराजित देख चुका था। उसने उन्हें कहा, "मैं तुमसे पहले जंतु भेजूँगा, जो हिवी, कनानी और हित्ती को तुमसे पहले खदेड़ देंगे।" उसने कभी उनसे नहीं कहा कि वे ऊपर चढ़कर लड़ें या किसी भी प्रकार की युद्ध की शुरुआत करें।

इस्राएल का ईश्वर से भय

इस्राएल को मिस्र से मुक्त कराने में, उसका इरादा था कि वे उससे परिचित हो जाएं और उस पर भरोसा करना सीखें। मिस्र में रहते समय इस्राएली तानाशाही के आत्मा से घिरे हुए थे। हिब्रू बच्चों को नदी में फेंके जाने और मिस्र में गुलामी के कठोर अनुभव के उदाहरण में, कई लोग इस धारणा से प्रभावित हुए कि ईश्वर एक तानाशाह है जो कभी भी उनके खिलाफ घूम सकता है और उन्हें मार सकता है। हम इस भय को प्रारंभ से व्यक्त होते देखते हैं:

निर्गमन 14:11 इस्राएलियों ने मूसा से कहा, 'क्या मिस्र देश में कबरों का अभाव था जो आप हमें निर्जन प्रदेश में मरने के लिए ले आए? आपने हमें मिस्र देश से निकालकर हमारे साथ यह क्या किया?

यह भय उस समय तक जाता है जब ईडन के बगीचे में, शैतान ने आदम को यकीन दिलाया कि जब ईश्वर ने कहा कि वे निश्चित रूप से मरेंगे, तो ईश्वर ही वही था जो उन्हें मारने आ रहा था।

उत्पत्ति 3:10 उसने उत्तर दिया, 'मैंने उद्यान में तेरी पग-ध्वनि सुनी। मैं डर गया, क्योंकि मैं नंगा था। इसलिए मैंने स्वयं को छिपा लिया है।'

इस्राएल ने अपने द्वारा बनाए गए ईश्वर के भय को मूसा को दोष देते हुए छुपाया। फिर भी यह स्पष्ट था कि मूसा ने लोगों को अपनी शक्ति से नहीं बाहर निकाला था। शैतान लोगों को यह सोचने की ललचा रहा था कि ईश्वर उन्हें जंगल में मारना चाहता था। यह ललचा केवल इसलिए संभव था कि उनका ईश्वर के चरित्र के बारे में गलत ज्ञान था। यह भय इस्राएलियों के लिए लगातार बढ़ता रहा:

निर्गमन 16:3 इस्राएलियों ने उनसे कहा, 'जब हम मिस्र देश में मांस की देगची के निकट बैठकर भरपेट भोजन करते थे, तब अच्छा होता कि हम प्रभु के हाथ मर गए होते; क्योंकि आप लोग इस निर्जन प्रदेश में समस्त जन-समुदाय को भूख से मार डालने के लिए मिस्र देश से हमें निकालकर लाए हैं।'

इस्राएली अपने ईश्वर के भय को व्यक्त करते हैं और स्पष्ट रूप से कहते हैं कि वे चाहते थे कि उन्हें मिस्र में ईश्वर के हाथ से मर जाना चाहिए था, बजाय अपनी वर्तमान स्थिति को सहन करने के। वे स्पष्ट रूप से ईश्वर पर भरोसा नहीं कर रहे थे और उनका मन शैतान द्वारा उसके सच्चे चरित्र के बारे में अंधा हो गया था।

अमालेक के साथ निर्णायक मोड़

उत्पत्ति के अगले ही अध्याय में इस्राएली अपने गलत विचारों को और अधिक प्रदर्शित करते हैं:

निर्गमन 17:3-4 किन्तु लोग वहाँ पानी के लिए प्यासे थे। वे मूसा के विरुद्ध बक-बक करने लगे। उन्होंने कहा, 'आप हमें, हमारी सन्तान और पशुओं को प्यास से मार डालने के लिए मिस्र देश से क्यों ले आए?' अतः मूसा ने प्रभु की दुहाई दी, 'मैं इन लोगों के साथ क्या करूँ? ये मुझे पत्थर से मार डालने को तत्पर हैं।'

वे लगातार शिकायत करते रहते हैं और मूसा, और इसलिए ईश्वर को मारने की इच्छा रखने का आरोप लगाते हैं। उनका हिंसक ईश्वर का बिडंबी दृष्टिकोण मूसा को मारने की धमकी में बदल जाता है। इस हिंसक ईश्वर के गलत विचार को देखकर वे उसी छवि में बदल जाते हैं, और लोग ईश्वर द्वारा मिस्र से उनकी रक्षा करने वाले व्यक्ति के खिलाफ हिंसक कृत्यों की साजिश रचते हैं।

लगातार शिकायत करना, गुस्सा करना और ईश्वर पर अविश्वास रखना उन्हें एक ऐसी स्थिति में ले जाता है जहाँ ईश्वर उनकी रक्षा करने में कम सक्षम होता है। वे शैतान को अपना स्वामी चुन रहे हैं, और शैतान उन्हें नष्ट करने के लिए पहुँच माँग रहा है। हम पानी की शिकायत और अमालेकियों के हमले के बीच संबंध देखते हैं:

निर्गमन 17:7-8 मूसा ने उस स्थान का नाम मस्सा और मरीबा रखा; क्योंकि इस्राएलियों ने वहाँ मूसा से विवाद किया और प्रभु को परखा था। उन्होंने कहा, 'क्या हमारे मध्य प्रभु है, अथवा नहीं? तत्पश्चात् अमालेक जाति के लोग आये। उन्होंने रफीदीम में इस्राएलियों से युद्ध किया।

अपने अविश्वास के कारण, वे ईश्वर की रक्षात्मक बाड़ के बाहर खुद को स्थापित करते हैं और इससे शत्रुओं से युद्ध होता है। ईश्वर इसे होने देता है अपने लोगों को विनम्र करने के लिए (उनका आध्यात्मिक कूल्हा उखड़ने जैसा), और याकोब की तरह, उन्हें विपत्ति के समय केवल उस पर टिकने के लिए प्रेरित करने के लिए।

इस्राएल के बच्चों का "विवाद", यानी ईश्वर के प्रति उनकी झगड़ाबाजी और द्वेष, ने शैतान को अमालेकियों को उन पर हमला करने के लिए उकसाने का दरवाजा खोल दिया। यदि इस्राएल ने प्रभु पर भरोसा किया होता, तो अमालेकियों को उन्हें छूने से डर लगता। ईश्वर के खिलाफ अपने पाप के लिए इस्राएल के तौबा करने का कोई प्रमाण नहीं है। उनके पास ईश्वर का एक तानाशाह चित्रण था जो उन्हें मारने का इरादा

रखता था। पानी प्राप्त करने में कृतज्ञता का कोई प्रमाण नहीं है। मूसा के प्रार्थना करने के लिए कोई माफी या धन्यवाद का उल्लेख नहीं है। इस्राएली ने मूसा को मारने की धमकी दी। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि यह मूसा को कितना ठेस पहुँचाता? वह अपने रेगिस्तानी घर में शांति में अपने परिवार की देखभाल कर सकता था और अपने झुंड की देखभाल कर सकता था। उसे शायद ईश्वर के प्रति उनकी दिखाई देने वाली नीच अकृतज्ञता का अहसास भी हुआ होगा। यह उसके लिए एक वास्तविक परीक्षा थी। फिर इस मानसिक स्थिति में, उसे सूचना मिलती है कि अमालेकियों हमला कर रहे हैं और कमजोरों को मार रहे हैं। अगला क्या होता है वह निर्णायक है। यह निराशापूर्ण परिस्थितियों और दबाव में लिया गया फैसला है।

निर्गमन 17:9 मूसा ने यहोशुअ से कहा, 'हमारे हेतु इस्राएलियों में से पुरुषों को चुन, और जा! अमालेक जाति से युद्ध कर! कल मैं परमेश्वर की लाठी अपने हाथ में लेकर पहाड़ी की चोटी पर खड़ा रहूंगा।'

विरासत में मिली तलवार

इसमें नहीं कहा गया, "और प्रभु ने मूसा को आदेश दिया।" इसमें नहीं कहा गया कि मूसा ने मंदिर में जाकर प्रभु से प्रार्थना की। बस यह कहा गया कि मूसा ने यहोशुआ से कहा कि वे लड़ें। जब मैं मूसा के यहोशुआ की ओर चलते हुए दृश्य की कल्पना करता हूँ, तो सब कुछ धीमी गति में जाता है और मेरे विचार अब्राहम के रात की ओर मुड़ जाते हैं जब उसने अपने भाई लोट को युद्ध के माध्यम से बचाया था।

सामान्य रूप से अब्राहम शांति का व्यक्ति था। उत्पत्ति 20 में अब्राहम ने अपनी पत्नी के बारे में झूठ बोला, कहते हुए कि वह उसकी बहन है, ताकि उसे मिस्र के राजाओं के साथ टकराहट से बचाया जा सके। उत्पत्ति 13 में अब्राहम के चरवाहों और लोट के बीच एक टकराहट हुई। ध्यान दें कि अब्राहम ने कैसे शांतिपूर्ण समाधान प्रस्तावित किया:

उत्पत्ति 13:8-9 अब्राम ने लोट से कहा, **‘तुम्हारे और मेरे मध्य, तुम्हारे चरवाहों और मेरे चरवाहों के मध्य झगड़े नहीं होने चाहिए, क्योंकि हम रिश्तेदार हैं। देखो, सारा देश तुम्हारे सामने है। तुम मुझसे अलग हो जाओ। यदि तुम बायीं ओर जाओगे तो मैं दाहिनी ओर जाऊंगा। यदि तुम दाहिनी ओर जाओगे तो मैं बायीं ओर जाऊंगा।’**

हालाँकि, उत्पत्ति 14 में हम उस क्षेत्र में युद्ध के बारे में पढ़ते हैं जहाँ लोट रहता था। परिणामस्वरूप, लोट को बंदी बना लिया गया।

उत्पत्ति 14:14-16 जब अब्राम ने सुना कि उनका भतीजा लोट बन्दी बना लिया गया है तब **उन्होंने अपने परिवार के तीन सौ अठारह, युद्ध-विद्या में प्रशिक्षित, सेवकों को लेकर दान नगर तक शत्रु का पीछा किया।** अब्राम ने रात में अपने सेवकों को अनेक दलों में बांट दिया, तथा अपने सेवकों के साथ शत्रु पर **आक्रमण किया** और दमिश्क नगर के उत्तर में होबा नगर तक उनका पीछा किया। तत्पश्चात् वह समस्त संपत्ति तथा अपने भतीजे लोट को उसकी सम्पत्ति-सहित तथा स्त्री-पुरुषों को छुड़ाकर वापस ले आए।

फिर भी, हम नहीं पढ़ते, "और प्रभु ने अब्राहम को आदेश दिया।" क्या प्रभु अब्राहम के कार्यों से प्रसन्न था? एक तो ऐसा लगता है क्योंकि उच्च पुरोहित मल्लिकजेदेक ने अब्राहम को आशीर्वाद दिया। लेकिन क्या यह आशीर्वाद एक पुरस्कार के लिए था, या अब्राहम को आराम देने के लिए था कि कितने लोग उसके हाथ से मर गए? मल्लिकजेदेक को "शालम" का "राजा" कहा गया है जिसका अर्थ "शांति" है। यह "यरूशलेम" का एक प्रारंभिक नाम हो सकता है जिसका अर्थ "शांति का शहर" है। क्या यह शांति का राजा हिंसक युद्ध के लिए अब्राहम को आशीर्वाद देगा? जब अब्राहम लड़ने के लिए शहरों के करीब पहुँचा, तो क्या उसने पहले

उन्हें शांति की घोषणा की? क्या अब्राहम ने भूमि को "उनके द्वारा भूमि पर बहाए गए खून" से अशुद्ध किया? यदि अब्राहम यहाँ अधिक धैर्यवान होता, तो क्या ईश्वर भूमि में जंतु भेजकर उसके शत्रुओं को खदेड़ता, या बाद में उत्पत्ति 18 और 19 में किए गए जैसे फरिश्तों को भेजकर लोट को बचाता? एक बात निश्चित है, जब हिब्रूओं का अध्याय 11 में अब्राहम द्वारा विश्वास से किए गए सभी कार्यों का वर्णन किया गया है, तो लोट की रक्षा का उल्लेख कभी नहीं किया गया।

आदम के समान स्थिति में बैठे अब्राहम ने आने वाली पीढ़ियों के लिए विरासत की प्रवृत्तियों की दिशा तय की। अब्राहम द्वारा तलवार उठाने से उसके वंशजों पर बड़े अंधेरे का भय झेलना पड़ा, और उसने उस भयावह रात को चखा जब उसने अपने हाथ में तलवार उठाई और एक भयानक भविष्य के बारे में सोचा।

उत्पत्ति 15:12 जब सूर्य अस्त हो रहा था तब अब्राम को गहरी नींद आ गई। सहसा उन पर घोर अन्धकार और आतंक छा गया।

ध्यान दें कि बाल के प्रतिनिधियों के खिलाफ तलवार का उपयोग करने के बाद इलिया ने क्या अहसास किया:

1 राजा 19:1-4 जो कार्य एलियाह ने किया था, उसकी सूचना राजा अहाब ने ईजेबेल को दी। उसने बताया कि एलियाह ने बअल देवता के **सब नबियों को तलवार से मौत के घाट उतार दिया।** अतः ईजेबेल ने एलियाह के पास एक दूत के हाथ से सन्देश भेजा, 'जैसे तूने मेरे नबियों के प्राण लिए, वैसे ही यदि मैं कल इस समय तक तेरा प्राण न लूं, तो देवता मेरे साथ कठोरतम व्यवहार करें।' एलियाह डर गए। वह उठे और प्राण बचा कर भागे। वह यहूदा प्रदेश के बएर-शेबा नगर में आए। वहाँ उन्होंने अपने सेवक को छोड़ दिया, और **स्वयं निर्जन प्रदेश की ओर चले गए। उन्होंने एक दिन का मार्ग पार किया। वह झाऊ वृक्ष के नीचे बैठ गए। उन्होंने प्रभु से अपनी मृत्यु मांगी। उन्होंने कहा, 'प्रभु, अब बहुत हो गया! तू मेरे प्राण ले ले। मैं अपने पूर्वजों से गया-बीता हूँ।'**

हिब्रूओं की पुस्तक का 7वाँ अध्याय हमें बताता है कि यीशु, शांति का राजकुमार, मल्किजेदेक के क्रम में उच्च पुरोहित हैं। पहले उल्लेख के अनुसार, यीशु ने पतरस को उसके तलवार के उपयोग के लिए फटकारा। जब उन्होंने कहा: "पर अब, जिसके पास थैला है, वह उसे ले ले, और इसी प्रकार उसका भी थैला; **और जिसके पास कोई तलवार नहीं है, वह अपना कपड़ा बेचे, और एक खरीदे।**" (लूका 22:36)। उन्हें लगा कि वह एक शाब्दिक तलवार के बारे में बोल रहा था। ध्यान दें कि इंटरनेशनल स्टैंडर्ड वर्जन (ISV) अध्याय 38 को इस प्रकार अनुवाद करता है: "तो उन्होंने कहा, 'हे प्रभु, देखो! यहाँ दो तलवारें हैं।' उसने उन्हें

जवाब दिया, 'इससे काफी है!'" किंग जेम्स वर्जन यीशु को यह कहते हुई उद्धृत करता है: "यह पर्याप्त है।" इसका शायद सतही पठन यह सुझाव दे सकता है कि यीशु ने उनके तलवार के उपयोग को स्वीकार किया बस यह कहकर कि दो तलवारें पर्याप्त थीं। हालाँकि, अगला क्या बताता है, यीशु के तलवार के प्रति उसकी वास्तविक राय को प्रकट करता है:

लूकस 22:49-51 येशु के साथियों ने यह देख कर कि क्या होने वाला है, उनसे कहा, "प्रभु! क्या हम तलवार चलाएँ?" और उन में से एक ने प्रधान महापुरोहित के सेवक पर प्रहार किया और उसका दाहिना कान उड़ा दिया। किन्तु येशु ने कहा, "रहने दो, बहुत हुआ", और उसका कान छू कर उन्होंने उसे अच्छा कर दिया।

मत्ती की पुस्तक में हमें यह अतिरिक्त पंक्ति मिलती है:

मत्ती 26:52 यीशु ने उससे कहा, "अपनी तलवार को उसकी जगह में रखो! जो कोई तलवार का उपयोग करता है, वह तलवार से मरेगा।" (ISV)

नाम "मल्किजेदेक" का अर्थ "धर्म का राजा" है। योहन ने दृष्टि में यीशु को सफेद घोड़े पर सवार देखा और कहा, "धर्म में वह न्याय करता है और युद्ध करता है।" (योहन्ना का प्रकाशन 19:11)। यीशु कैसे धर्म में न्याय करता है और युद्ध करता है? हिंसा से नहीं, बल्कि अपने वचन से:

योहन 12:47-48 यदि कोई मेरी शिक्षा सुन कर उस पर नहीं चलता, तो मैं उसे दोषी नहीं ठहराता हूँ; क्योंकि मैं संसार को दोषी ठहराने नहीं, बल्कि संसार का उद्धार करने आया हूँ। जो मेरा तिरस्कार करता और मेरी शिक्षा ग्रहण करने से इन्कार करता है, उसको दोषी ठहराने वाला एक है : जो वचन मैंने कहा है, वही उसे अन्तिम दिन दोषी ठहराएगा। '

ईश्वर जो युद्ध में शामिल है वह एक वचनों का युद्ध है – शैतान का वचन ईश्वर के वचन के खिलाफ। ईश्वर धर्मता के बाहर कुछ भी नहीं करता। धर्म में न्याय करना किसी अन्य पर हानि या मृत्यु नहीं लाता:

नीतिवचन 11:4-6 मृत्यु के दिन धन किसी काम नहीं आता, किन्तु मनुष्य की धार्मिकता उसको मृत्यु से बचाती है! निर्दोष मनुष्य अपनी धार्मिकता के कारण अपने जीवनमार्ग में सीधा चलता है। किन्तु दुर्जन की दुर्जनता के कारण उसका पतन हो जाता है। निष्कपट मनुष्य की रक्षा उसकी धार्मिकता करती है, पर विश्वासघाती मनुष्य अपनी वासना के जाल में फंस जाता है।

नीतिवचन 12:28 **धर्म का मार्ग जीवन का मार्ग है; पर टेढ़े रास्ते पर चलना मृत्यु को बुलावा देना है।**

ईश्वर युद्ध में अपने शत्रुओं को कैसे जीतता है? उन्हें दंड देने, यातना देने, या मारने से नहीं, बल्कि अपने शत्रुओं को दोस्तों में बदलने से। धर्मता व्यक्ति को नष्ट नहीं करती, यह पाप के "पुराने आदमी" को मारती है (द्वितीय विधान 32:39; रोमियों 6:6-11) और "मृत्यु से बचाती है।" ईश्वर बुराई पर जीतता है और अपना "बदला" हमेशा अच्छा करके प्राप्त करता है।

रोमियों 12:17-21 बुराई के बदले बुराई नहीं करें। जो बातें सब मनुष्यों की दृष्टि में सात्विक हैं, उन्हें अपना लक्ष्य बनाएँ। जहाँ तक हो सके, अपनी ओर से सब के साथ शान्तिपूर्ण संबंध रखें। प्रिय भाइयो और बहिनो! आप स्वयं बदला न लें, बल्कि उसे परमेश्वर के प्रकोप पर छोड़ दें; क्योंकि धर्मग्रंथ में लिखा है : “प्रभु कहता है: **प्रतिशोध लेना मेरा काम है, मैं ही बदला लूंगा।**” परंतु यह भी लिखा है, “**यदि आपका शत्रु भूखा है, तो उसे भोजन खिलायें और यदि वह प्यासा है, तो उसे पानी पिलायें; क्योंकि ऐसा करने से वह आपके प्रेमपूर्ण व्यवहार से पानी-पानी हो जाएगा।**” आप बुराई से हार न मानें, बल्कि **भलाई द्वारा बुराई पर विजय प्राप्त करें।**

धर्म में न्याय करने से शांति होगी, युद्ध नहीं।

यशायाह 2:4 **प्रभु राष्ट्रों के मध्य न्याय करेगा; वह भिन्न-भिन्न कौमों को अपना निर्णय सुनायेगा। तब विश्व में शान्ति स्थापित होगी : राष्ट्र अपनी तलवारों को हल के फाल बनायेंगे, वे अपने भालों को हंसियों में बदल देंगे। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध तलवार नहीं उठायेगा, वे युद्ध-विद्या फिर नहीं सीखेंगे।**

मेरा मन फिर शेखेम के गाँव में जाता है, जहाँ अब्राहम के परपोतों लेवी और शिमियोन के हाथों में तलवार फट जाती है, उनकी बलात्कृत बहन के बदले में। उन्होंने धोखेबाजी से शांति संधि तैयार की थी, यह वादा करते हुए कि यदि हामोर, उसका पुत्र शेखेम, और घर के सभी पुरुष खतना कर लें, तो उन्हें हिब्रू बेटियों के साथ शादी करने की अनुमति मिल सकती है। वे सभी एक-दूसरे के साथ शादी कर सकते थे और एक घर बन सकते थे।

उत्पत्ति 34:25-29 जब तीसरे दिन वे सब पीड़ित पड़े थे तब दीना के भाई, अर्थात् याकूब के दो पुत्र शिमोन और लेवी, तलवार लेकर नगर पर अचानक चढ़ आए। उन्होंने सब पुरुषों को मार डाला। उन्होंने हमोर और उसके पुत्र शेखेम का भी वध कर दिया। वे शेखेम के घर से दीना को लेकर चले गए। याकूब के अन्य पुत्र मृतकों के पास गए। उन्होंने नगर को लूट लिया; क्योंकि उनकी बहिन के साथ बलात्कार किया गया था। याकूब के पुत्रों ने उनकी भेड़-बकरी, गाय-बैल, गधे, अर्थात् जो कुछ नगर और मैदान में

था, सब लूट लिया। उनकी धन-सम्पत्ति, उनके बाल-बच्चे, उनकी स्त्रियाँ और जो कुछ उनके घरों में था, सब को लूटकर अपने अधिकार में कर लिया।

अब्राहम के कार्य का बीज, अपने भाइयों की धोखेबाजी से सहायता पाकर लेवी और शिमियोन के जीवन में बड़े पैमाने पर फूट पड़ता है। वास्तव में याकोब यह शोक कर सकता था कि उनके वंशज कनानी और पेरिज़ियों की आँखों में बदबू करेंगे और कि, जैसे उन्होंने तलवार उठाई है, तलवार उनके पीछे पीढ़ियों से चली जाएगी। ध्यान दें याकोब की फटकार:

उत्पत्ति 34:30 याकूब ने शिमोन और लेवी से कहा, 'तुम लोगों ने मुझे इस देश के निवासियों में—कनानी तथा परिज्जी जातियों में, अप्रिय बनाकर आपत्ति मोल ली है। मेरे पास बहुत कम व्यक्ति हैं। यदि वे परस्पर एकत्रित होकर मुझपर आक्रमण करें तो सारे परिवार सहित मैं नष्ट हो जाऊंगा।'

क्या उनके पूर्वज के कार्य की कहानी का बार-बार बताना, अपनी बहन की रक्षा के लिए शेखेमियों को मारने के लिए अपने पिता के उठाए गए कार्य के लिए लेवी के बच्चों पर प्रभाव पड़ा? क्या लेवी के कुछ बच्चों को अपने पिता ने अपनी बहन की रक्षा में क्या किया इससे गर्व करने का लोभ होगा? क्या शैतान उन्हें सुझाव नहीं देगा कि उसके कार्य स्वयं-रक्षा के रूप में उचित थे? इतिहास के इस व्याख्या को स्वीकार करना क्या इस बात से बचने से आसान नहीं होगा कि आपका पूर्वज एक रक्तचोर था और इस शर्म को पीढ़ियों से ले जाना होगा?

सारा इतिहास अब मूसा के पैरों के पीछे चलता है। मेरा मन मूसा के जीवन के प्रारंभिक चरण में स्थानांतरित होता है। जब उसने एक मिस्री गुलाम मालिक को अपने यहूदी रिश्तेदार को पीटते हुए देखा, तो "अपने एक को बचाने" का आकर्षण उसके पास आया। उसके पिता लेवी की सीटी उग्रता के साथ उठती है; मूसा ने मिस्री की हत्या कर दी और उसका क्रोध शांत हो गया। लेकिन मूसा ने जल्दबाजी में कार्य किया। उसने यह धारणा बनाई कि ईश्वर ने उसे अपनी जनता को एक जीतने वाले योद्धा के रूप में उगला था। पर प्रभु कभी बल या युद्ध के माध्यम से अपना कार्य पूरा करने की योजना नहीं बनाता था।

जकर्याह 4:6 तब दूत ने मुझे बताया, 'जरुब्बाबेल के लिए प्रभु का यह सन्देश है: स्वर्गिक सेनाओं का प्रभु यों कहता है: बल से नहीं, शक्ति से नहीं, वरन् मेरे आत्मा के द्वारा।'

क्या चालीस साल रेगिस्तान में मूसा को "अपने को बचाने" के लिए अपने फैसलों से परे जाने का लोभ छोड़ दिया? क्या मूसा ने समझा कि अमालेक ने पहले ही शिविर में कुछ कमजोरों की हत्या कर दी है? अपनी मृत्यु के समय से पहले मूसा याद करता है:

'व्यवस्था-विवरण 25:17-19 स्मरण रखना कि जब तुम मिस्र देश से निकल कर जा रहे थे, तब अमालेकी जाति ने मार्ग में तुमसे कैसा व्यवहार किया था। अमालेकी जाति के लोग मार्ग में तुम्हें मिले थे। जब तुम आगे बढ़ गए थे तब उन्होंने तुम पर पीछे से आक्रमण किया था और पिछड़ गए लोगों को मार डाला था। जब तुम यात्रा के कारण कमजोर और थके-मांदे थे, तब वे परमेश्वर से नहीं डरे! इसलिए जब तुम्हारा प्रभु परमेश्वर तुम्हारे चारों ओर के शत्रुओं से छुड़ाकर तुम्हें उस देश में शान्ति-चैन देगा, जो वह पैतृक-अधिकार के लिए तुम्हें प्रदान कर रहा है, तब तुम आकाश के नीचे से अमालेकी जाति की स्मृति मिटा डालना। तुम यह बात मत भूलना!'

क्या सब कुछ शैतान द्वारा तैयार किया गया था ताकि इस्राएल फिर से तलवार उठाए, इस प्रकार इस्राएल को दुनिया की आँखों में बदबू कर दे? क्या शैतान ने यह योजना बनाई थी कि ईश्वर का चरित्र पीढ़ियों के दौरान गलत तरीके से प्रस्तुत किया जाए? इस्राएली स्वयं ईश्वर के चरित्र को समझने में गलत थे, तो क्या यह संभव है कि तलवार उठाना केवल इस्राएल द्वारा कल्पित ईश्वर का प्रकटीकरण था? यदि यह कल्पित ईश्वर तक भी जब जरूरत पड़ने पर उन्हें पानी नहीं दे पा रहा था, तो क्या वे अमालेकियों के हाथ मरने में कोई चिंता रखता?

हमने देखा है कि ईश्वर कभी भी वादे की भूमि पर कब्जा करने के लिए युद्ध का उपयोग करने का इरादा नहीं रखता था। क्या इसलिए यह सुरक्षित है कि इस अनआदेशित और अनप्रार्थित कार्य, यहोशुआ को अमालेकियों के साथ तलवार से लड़ने के लिए बुलाना, वह नहीं था जिसे उसने योजना बनाई थी? इस्राएल को अमालेकियों को हराने में मदद करने के लिए आवश्यक बड़ी लड़ाई और लंबी गहरी प्रार्थनाओं के दृश्य से यह स्पष्ट है कि यह ईश्वर के मूल इरादे का हिस्सा नहीं था। फिर भी ईश्वर ने उन्हें इस रास्ते पर चलने दिया क्योंकि उनमें से अधिकांश ईश्वर को हिंसक और युद्धप्रिय के रूप में कल्पित करते थे।

जब शैतान को मिस्रीयों की हत्या करने की अनुमति दी गई, तो वह लगातार इस्राएली को बता रहा था कि उनका ईश्वर यह कार्य कर रहा था। मिस्र में महामारियों की घटनाओं के लिए एक स्पष्टीकरण के लिए, कैल्वरी इन इजिप्ट ब्रोशर देखें।

एक बार इस कदम उठाने के बाद, तलवार का उपयोग करने से बचना बहुत मुश्किल हो जाएगा। ईश्वर ने अमालेक के साथ घटनाओं के बाद उनसे अपील की कि उसके पास तलवार के उपयोग की आवश्यकता नहीं थी (उत्पत्ति 23:27-30), लेकिन जब तक इस्राएल ईश्वर के वास्तविक चरित्र को नहीं देख पाएगा, तब तक वे उसे फिर से और फिर से उपयोग करने के लिए ललचाएंगे।

कोरा, दाथन और अबिराम और 250 राजकुमारों की कहानी में हम देखते हैं कि जंगल में उन्हें मारने की इच्छा रखने वाले ईश्वर का भय कैसे मूसा और अहरोन के अलावा अन्य नेतृत्व की तलाश करने के लिए उन्हें ले जाता है। फिर जब वे कनान की सीमाओं तक पहुँचे, तो उन्होंने भूमि के बारे में बुरी रिपोर्ट दी क्योंकि वे विश्वास नहीं कर पाए कि ईश्वर उन्हें प्यार करता है और उनके लिए अच्छा करेगा। उन्होंने उसकी सभी रक्षा और देखभाल की उपेक्षा की और कुछ भी नकारात्मक पर ध्यान केंद्रित किया। शैतान इन बातों पर उन्हें आसानी से ललचा सकता था क्योंकि वे एक ईश्वर में विश्वास करते थे जो उन्हें मारने की इच्छा रखता था और अपना मूड कभी भी बदल सकता था। हर बार जब शैतान को रक्षात्मक बाड़ को तोड़ने और इस्राएली को हानि पहुँचाने की अनुमति दी गई, तो वह उन्हें बताता था कि ईश्वर सीधे अपने हाथ से उन्हें दंडित कर रहा है। ईश्वर के लिए अपने लोगों को उसके बारे में ऐसे झूठों में विश्वास करने के लिए तैयार होना कितना दुखद होगा।

जन-गणना 14:2-3 सब इस्राएली मूसा और हारून के विरुद्ध बक-बक करने लगे। उन्होंने मूसा और हारून से कहा, ‘भला होता कि हम मिस्र देश में मर जाते! अथवा इसी निर्जन प्रदेश में मर जाते! क्यों प्रभु हमें उस देश में ले जाना चाहता है? क्या तलवार से मार डालने के लिए? वे हमारी पत्नियों और बच्चों को हम से लूट लेंगे। यह हमारे लिए अच्छा है कि हम मिस्र देश को लौट जाएँ।’

जन-गणना 14:22-23 अतः वे सब व्यक्ति जिन्होंने मेरी महिमा के दर्शन किए, मेरे उन अद्भुत कार्यों को देखा जिनको मैंने मिस्र देश तथा निर्जन प्रदेश में किया, फिर भी जिन्होंने दस बार मुझे कसौटी पर कसा और मेरी वाणी नहीं सुनी, वे उस देश को नहीं देख सकेंगे जिसको प्रदान करने की शपथ मैंने उनके पूर्वजों से खाई थी। मेरा तिरस्कार करने वाला कोई भी व्यक्ति उस देश को नहीं देख सकेगा।

जब इस्राएल को बताया गया कि उनके पाप के कारण वे भूमि पर चढ़ नहीं सकते, तो उन्होंने फिर से विद्रोह कर दिया और युद्ध करने के लिए चढ़ने का फैसला कर दिया, जब ईश्वर ने उन्हें लड़ने का आदेश नहीं दिया था।

जो भी प्रभु ने कहा है, हम करेंगे।

इससे यह स्पष्ट होता है कि ईश्वर ने कनान की भूमि को युद्ध से प्राप्त करने का इरादा नहीं था। इसका सबूत सिनाई पर्वत पर दस आदेश देने से ठीक पहले इजराइल द्वारा ईश्वर को दिए गए उस जवाब में भी मिलता है।

निर्गमन 19:5-8 अब यदि तुम ध्यान से मेरी बात सुनोगे और मेरे विधान का पालन करोगे, तो तुम सब जातियों में मेरी निज सम्पत्ति बनोगे, क्योंकि समस्त पृथ्वी मेरी ही है। तुम मेरे लिए पुरोहितों का राज्य, एक पवित्र राष्ट्र बनोगे।” तू ये ही बातें इस्राएलियों से कहना।’ मूसा आए। उन्होंने इस्राएली समाज के धर्मवृद्धों को बुलाया, और उनके सम्मुख ये बातें रखीं जिनकी आज्ञा प्रभु ने मूसा को दी थी। सब लोगों ने एक-साथ उत्तर दिया, **‘प्रभु ने जो कहा है, वह हम करेंगे।’** मूसा लौटे और उन्होंने प्रभु को लोगों का उत्तर सुनाया।

जब इजराइली लोग मिस्र वापस थे, तब ईश्वर ने उन्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाने में उनके लिए सब कुछ करने का वादा किया था। उन्होंने उनके लिए सात बातों का वादा किया था।

निर्गमन 6:6-8 जा, इस्राएलियों से कहना, “मैं प्रभु हूँ। मैं तुम्हें मिस्र निवासियों के बोझ के दबाव से बाहर निकालूंगा। मैं तुम्हें उनकी गुलामी से मुक्त करूंगा। मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा और न्याय-निर्णय के महान कार्य करके तुम्हारा उद्धार करूंगा। मैं तुम्हें अपनी प्रजा के रूप में ग्रहण करूंगा और तुम्हारा परमेश्वर होऊंगा। तुम्हें ज्ञात होगा कि मैं तुम्हारा परमेश्वर, प्रभु हूँ जिसने तुम्हें मिस्र निवासियों के बोझ के दबाव से बाहर निकाला है। मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा, जिसे अब्राहम, इसहाक और याकूब को प्रदान करने के लिए मैंने शपथ खाई थी। मैं तुम्हें उसे प्रदान करूंगा कि तुम्हारा उस पर अधिकार हो। मैं प्रभु हूँ।” ’

इन वादों में यह संकेत नहीं है कि ईश्वर उन्हें कनान की भूमि में उनके दुश्मनों को नष्ट करने में मदद करेगा। ईश्वर का यह प्रस्ताव बिल्कुल अद्भुत था। इजराइली लोगों ने क्या जवाब दिया?

निर्गमन 6:9 मूसा ने इस्राएलियों को ये बातें सुनाई। परन्तु उन्होंने अपने अधीर आत्मा और कठोर गुलामी के कारण उनकी बातें नहीं सुनीं।

वे यह मानने से इनकार कर दिया कि ईश्वर उनके लिए ऐसा करेगा। वे यह विश्वास करते थे कि ईश्वर ने उन्हें गुलामी में जाने दिया था और वे उन्हें अपनी पीड़ा के लिए दोषी ठहराते थे, इसलिए वे ईश्वर पर भरोसा नहीं करते थे कि वह उन्हें बचाएगा।

फिर भी ईश्वर आगे बढ़ा और उन्हें मिस्र से बाहर निकाल लिया, जैसा कि उसने इब्राहिम, इसहाक और याकूब को वादा किया था। सिनाई पर्वत के तल पर इजराइली लोग देख सकते थे कि वे स्वतंत्र थे, और ईश्वर ने उनके सामने एक बार फिर अपना वादा रखा कि वह उन्हें आशीर्वाद करेगा।

उनका जवाब यह था कि जो भी ईश्वर ने उनके लिए करने का वादा किया था, वे वास्तव में खुद करेंगे। "जो भी प्रभु ने कहा है, हम करेंगे।" ईश्वर ने कहा था कि "मैं करूंगा," लेकिन इजराइल ने कहा कि वे करेंगे।

ईश्वर की कृपा में आराम करने के बजाय, उन्होंने प्रभु से कहा कि वे उस कार्य को पूरा करेंगे जिसे ईश्वर ने उनके लिए करने का वादा किया था। जब वे उसके वादों को उसके खिलाफ उलट देते, तो ईश्वर क्या कर सकता था? अपने विशाल प्रेम में, उन्होंने उन्हें सहन किया और उन्हें अपने रास्ते पर चलने दिया, ताकि वे युद्ध के द्वारा भूमि प्राप्त करने की कोशिश कर सकें। यह उसकी योजना नहीं थी, लेकिन वे उनके साथ गया और उनकी गलत समझ के माध्यम से उन्हें महत्वपूर्ण सबक सिखाने की कोशिश की।

चालीस साल बाद...

इजराइली लोग बार-बार कहते थे कि वे डरते थे कि ईश्वर उन्हें रेगिस्तान में मार देगा। जैसा कि हम थोड़ी देर बाद जानेंगे, ईश्वर ने उनकी ईश्वर के बारे में अपनी दृष्टि को उन्हें न्याय करने दिया। एक पूरी पीढ़ी रेगिस्तान में मर गई, जिसके हाथों से उन्हें एक देवता में विश्वास करने की मूर्तिपूजा में धोखा दिया गया था, जो रेगिस्तान में उन्हें मारना चाहता था।

अय्यूब 3:25 जिस बात से मैं डरता था, वही मुझ पर आयी; जिससे मैं आतंकित था, वही मुझ पर टूट पड़ा।

योब बहुत डरता था कि उसे आपदा भोगनी पड़ेगी। क्या उसकी आपदा का एक कारण उसका यह डर भी था? क्या नई विश्व व्यवस्था और मौत के शिविरों के बारे में लगातार डरना वास्तव में शैतान को उसे लाने की अनुमति देने में योगदान कर सकता है?

जब चालीस साल बीत गए और एक पूरी पीढ़ी मर गई, तो वे फिर सीमा पर आ गए। पिताओं के पाप अब भी उनके बच्चों के मुंह में थे:

जन-गणना 21:5 वे परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बोलने लगे, 'आप हमें मिस्र देश से निकालकर इस निर्जन-प्रदेश में क्यों लाए? क्या हमें मारने के लिए? यहाँ न रोटी है और न पानी। हम इस रोटी से, जिससे तृप्ति नहीं होती, ऊब गए हैं।'

अपने अनुभवों के उस गहरे और अंधेरे पक्ष पर लगातार ध्यान देकर, वे ईश्वर से लगातार दूर होते गए। अपने ऊपर त्रास लाकर, अपनी स्थिति को ईश्वर के द्वारा तय किए गए से बहुत अधिक कठिन बना दिया, उन्होंने अपनी सारी बुराई और मुसीबतें उसी पर ठहराईं। अपनी यात्रा के हर दिन, ईश्वर ने उन्हें ईश्वरीय कृपा के एक चमत्कार से सुरक्षित रखा, जब उसने उन्हें "उस बड़े और भयानक रेगिस्तान में ले गया, जिसमें आग के सर्प, बिच्छू, और सूखा था, जहाँ पानी नहीं था।" (द्वितीय वेद 8:15)।

व्यवस्था-विवरण 29:2-5 मूसा ने समस्त इस्राएली समाज को बुलाया, और उनसे यह कहा, 'जो व्यवहार प्रभु ने मिस्र देश में तुम्हारी आंखों के सामने फरओ तथा उसके सारे कर्मचारियों के साथ, उसके समस्त देश के साथ किया था, वह तुमने देखा है। तुम्हारी आंखों ने परीक्षा के महान कार्यों को, चिह्नों और महान आश्चर्यपूर्ण कामों को, देखा है। परन्तु आज तक प्रभु ने तुम्हें समझने के लिए हृदय, देखने के लिए आंखें और सुनने के लिए कान नहीं दिए हैं। मैं निर्जन प्रदेश में चालीस वर्ष तक तुम्हारा नेतृत्व करता

रहा। तब तुम्हारे वस्त्र फटकर तुम्हारे शरीर पर से नहीं गिरे, और न तुम्हारे जूते फटकर तुम्हारे पैरों से अलग हुए।

अगर अपने प्रेम के इन सभी प्रमाणों के बाद भी लोग शिकायत करते रहे, तो प्रभु अपनी सुरक्षा वापस ले लेंगे, उन्हें अपनी सुरक्षात्मक बाड़ के बाहर चले जाने की अनुमति देकर, जब तक कि वे उसकी करुणामयी देखभाल को समझ न जाएँ और उसके पाश्चात्यता और विनम्रता के साथ वापस न आएँ। ईश्वर हमारी स्वतंत्र इच्छा के प्रति ऐसा करता है; वह हम पर अपनी सुरक्षा थोप नहीं पाएगा – लेकिन वह हमें पूरी तरह छोड़ नहीं देगा; वह हमारे कर्मों के परिणामों को इस तरह मध्यस्थता करेगा कि हम अपनी स्थिति को समझ जाएँ।

सभा-उपदेशक 10:8 जो दूसरे व्यक्ति के लिए गड्ढा खोदता है, वह स्वयं उसमें गिरेगा। जो चोरी के लिए दीवार में सेंध लगाता है, उसको सांप डसेगा।

भजन संहिता 80:12,14-15 तब तूने उसके बाड़े को क्यों गिरा दिया? अब राही उसके फल को तोड़ते हैं। हे स्वर्गिक सेनाओं के परमेश्वर, लौट आ; स्वर्ग से दृष्टिपात कर; इस बेल की सुधि ले और इसकी रक्षा कर। इस बेल को तूने अपने दाहिने हाथ से रोपा था; इस शाखा को तूने अपने लिए सुदृढ़ किया था।

मूसा अवज्ञा में शिला पर मारता है

इजराइली लोग ईश्वर से लगातार दूर जा रहे थे, और उनकी उसके स्वभाव को समझने की क्षमता लगातार कम होती जा रही थी। चालीस साल बाद इजराइल फिर से पानी की पर्याप्तता के बारे में शिकायत करने के मामले में वही जगह पार कर गया, और उन्होंने फिर से एक ऐसा ही जवाब दिया, बस इस बार और अधिक सीधे।

जन-गणना 21:5 वे परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बोलने लगे, 'आप हमें मिस्र देश से निकालकर इस निर्जन-प्रदेश में क्यों लाए? क्या हमें मारने के लिए? यहाँ न रोटी है और न पानी। हम इस रोटी से, जिससे तृप्ति नहीं होती, ऊब गए हैं।'

शैतान इस समय मूसा पर काम कर रहा था, उसे इन दुखी और निर्बल लोगों पर विश्वास छोड़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था। ईश्वर ने मूसा को इस बात की परीक्षा ली थी, जब वह पर्वत पर ईश्वर के साथ था और इजराइली लोग सोने के बैल की पूजा कर रहे थे (उद्धरण 32:9-14), और आभार से मूसा ने यीशु के आत्मा का जवाब दिया और ईश्वर से लोगों को क्षमा करने का अनुरोध किया, जिसे उसने करुणापूर्वक किया। फिर भी, अब देखकर कि इजराइल पहले से भी बुरा हो गया था, मूसा ताज्जुब का शिकार हो गया।

जन-गणना 20:10-11 मूसा और हारून ने चट्टान के सामने धर्मसभा को एकत्र किया, और मूसा ने कहा, 'अरे विद्रोहियो, मेरी बात सुनो! क्या हम इस चट्टान से तुम्हारे लिए पानी बाहर निकालें?' मूसा ने अपना हाथ ऊपर उठाया और अपनी लाठी से दो बार चट्टान पर प्रहार किया। तब अपार जल बाहर फूट कर निकल पड़ा! इस्राएली जनसमुदाय और उनके पशुओं ने पानी पिया।

जब मूसा इस प्रलोभन में आ गया, तो इससे शैतान को इजराइली लोगों के मनो पर अधिक पहुँच मिली। उन्होंने उनके लिए प्रार्थना की और उनके और शैतान के बीच कई तरीकों से खड़े रहे। फिर भी, इस कदम ने शैतान को फायदा दिया। अपनी इस विफलता के परिणामस्वरूप आरोन की जान लेने में समर्थ होने पर शैतान खुश हुआ।

जन-गणना 20:24 'हारून अपने मृत पूर्वजों में जाकर मिल जाएगा। वह उस देश में प्रवेश नहीं करेगा, जिसे मैंने इस्राएली समाज को प्रदान किया है, क्योंकि तुम लोगों ने मरीबा के जल-स्रोत पर मेरे आदेश के प्रति विद्रोह किया था।

इजराइल एक वचन लेता है

इजराइली लोगों के मनो पर अधिक पहुँच के साथ, शैतान ने उन्हें ईश्वर के साथ एक सौदा करने के लिए प्रेरित किया, जो वह ईश्वर था जिसे वे यही कहते थे कि वह लोगों को मारने को तैयार था। उन्हें अपने पापों के लिए किसी अन्य जनजाति द्वारा हमला किया गया था, और अब अपनी निराशा में उन्होंने एक वचन दिया:

जन-गणना 21:1-3 जब अराद के कनानी राजा ने, जो नेगेब में रहता था, सुना कि इस्राएली अतारीम के मार्ग से आ रहे हैं, तब उसने इस्राएलियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया और उनमें से कुछ व्यक्तियों को बन्दी बना लिया। **इस्राएलियों ने प्रभु से यह मन्त्रत मानी और कहा, 'यदि तू इन लोगों को हमारे हाथ में दे देगा, तो हम इनके नगरों को पूर्णतः ध्वस्त कर देंगे।' प्रभु ने इस्राएलियों की वाणी सुनी।** उसने कनानियों को उनके हाथ में सौंप दिया। अतः इस्राएलियों ने उनको एवं उनके नगरों को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया। इस कारण उस स्थान का नाम 'होर्मा' पड़ा।

ईश्वर ने इजराइली लोगों से अपने दुश्मनों का वध करने को नहीं कहा था। उनका ईश्वर के बारे में गलत दृष्टिकोण उन्हें यह विश्वास करने पर मजबूर करता था कि वह चाहता है कि वे ऐसा एक खूनी वचन बनाएँ, और यह उसकी मंजूरी प्राप्त करेगा और वह उनकी मदद करेगा। इसमें लिखा है कि ईश्वर ने उनकी आवाज़ सुनी। ईश्वर ने उनकी आवाज़ सुनी, क्यों? क्या इससे उनका यह विचार मजबूत नहीं हो जाएगा कि ईश्वर चाहता है कि वे अपने दुश्मनों को मारें? इसका उत्तर दृष्टांत के दौरान मिलता है:

लूका 19:20-23 फिर दूसरा दास आया और कहा, “साहब, देखो! यह आपकी रकम है। मैंने इसे एक कपड़े में रखा था ताकि सुरक्षित रहे। मैं आपसे डरा था। आप एक कठिन आदमी हैं। आप वह नहीं जमा करते जो नहीं रखा, और वह नहीं बोते जो नहीं लगाया।” (22) राजा ने उससे कहा, “मैं तुम्हें तुम्हारे अपने शब्दों से न्याय करूँगा, तुम बुरे दास! तुम जानते थे, न कि, कि मैं एक कठिन आदमी हूँ, और मैं वह नहीं जमा करता जो नहीं रखा, और वह नहीं बोता जो नहीं लगाया? (23) तो फिर तुम मेरी रकम को बैंक में क्यों नहीं रखे? जब मैं लौटा, तो मैं उसे ब्याज के साथ वसूल भी सकता था।” (ISV)

आलसी दास ने प्रभु को “एक कठिन आदमी” के रूप में कल्पना की, या जैसा कि KJV में कहा गया है, “एक कठोर व्यक्ति”। इस विश्वास के अनुसार, उसे न्याय मिला। जैसा शास्त्र में कहा गया है:

याकूब 2:12-13 आपकी बातचीत और आपका आचरण उन लोगों के सदृश हो, जिनका न्याय स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली व्यवस्था के अनुसार किया जायेगा। जिसने दया नहीं दिखायी है, उसका न्याय दया के साथ नहीं किया जायेगा; किन्तु दया न्याय पर विजय पाती है।

ईश्वर ने उस आदमी को जिसके पास उसके बारे में गलत दृष्टिकोण था, उसे उसकी अपनी विचारों के अनुसार न्यायित होने दिया। ईश्वर ऐसा कैसे करता है?

गलातियों 6:7 धोखा न खाइए। परमेश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता। मनुष्य जो बोता है, वही काटता है।

निर्गमन 34:7 वह हजारों पीढ़ियों पर करुणा करने वाला; अधर्म, अपराध और पाप को क्षमा करनेवाला है। किन्तु वह दोषी को किसी भी प्रकार निर्दोष सिद्ध न करेगा। वह पूर्वजों के अधर्म का दण्ड तीसरी और चौथी पीढ़ी तक उनकी संतान तथा आनेवाली संतान को देता रहता है।

इजराइल के आसपास के देश पहले ही ईश्वर की सुरक्षा की सीमा से बहुत आगे निकल चुके थे। इजराइल ने ईश्वर के प्रेमवाले स्वभाव की सच्चाई स्वीकार करने से इनकार कर दिया। वे इस पर अड़े रहे कि वह उन्हें और दूसरों को नुकसान पहुँचाना चाहता है। जब इजराइल ईश्वर के साथ अपने दुश्मनों का वध करने का वचन बनाने के स्थान पर पहुँचा, तो ईश्वर ने उनकी आवाज़ सुनी, न कि विश्वस्त होने का पुरस्कार के रूप में, बल्कि उन्हें अपने गलत दृष्टिकोण को रखने देने और पाप को पाप से सजा देने के लिए (इस मामले में, कनानियों के पाप को इजराइलियों के पाप से सजा देने)। “बुराई बुरे को मारेगी...” (स्तुति 34:21)। उन्होंने पिताओं की बुराई को उनके बच्चों पर उसी प्रकार लागू किया जैसा कि उन्होंने कहा था कि वह करेंगे। इजराइल को इस संदर्भ में अपने दुश्मनों को हराने की अनुमति देना, यह था प्रभु का उन्हें अपनी यह अड़ी राय रखने देना कि ईश्वर एक फाँसी का आदमी है। उन्होंने लंबे समय तक उन्हें अपने असली प्रेम के स्वभाव को दिखाने की कोशिश की, उन्हें कई आशीर्वादों से सुन्नत करके, लेकिन अंत में, उन्होंने उन्हें अपने क्रूर गलत विश्वासों को बनाए रखने दिया और उन्हें इसी के द्वारा न्यायित होने दिया। यह ठीक वैसा ही था जैसा उन्होंने बाद में अविश्वासी यहूदी नेताओं के साथ किया:

प्रेरितों 13:46 पौलुस और बरनबास ने निडर हो कर कहा, “यह आवश्यक था कि पहले आप लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाया जाता, परन्तु आप लोग इसे **अस्वीकार करते हैं** और अपने को शाश्वत जीवन के योग्य नहीं समझते। इसलिए हम अब गैर-यहूदियों के पास जाते हैं।

ईश्वर इजराइल को वही देता है जो वे चाहते हैं

इजराइल के कनान की सीमाओं पर पहली असफलता से पहले, हमें इजराइल की मांस खाने की इच्छा के बारे में शिकायत मिलती है। वे अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए अपने तंबूओं में रो रहे हैं। इस बिंदु पर मूसा प्रभु से शिकायत करता है कि उसे उठाने के लिए क्या बोझ है।

जन-गणना 11:10-11 मूसा ने लोगों का रोदन सुना। परिवार का प्रत्येक व्यक्ति अपने तंबू के द्वार पर रो रहा था। प्रभु का क्रोध बहुत भड़क उठा। मूसा को यह बुरा लगा। उन्होंने प्रभु से कहा, 'तूने क्यों अपने सेवक के साथ बुरा व्यवहार किया? मैंने क्यों तेरी कृपा-दृष्टि प्राप्त नहीं की? तूने क्यों इन सब लोगों का भार मुझ पर डाला?

मूसा के लिए यह परीक्षा उसके स्वभाव के उन पहलुओं को प्रकट करती है जो अभी भी ईश्वर के स्वभाव के बारे में गलत जानकारी दर्शाते हैं।

जन-गणना 11:14-15 मैं अकेला इन सब लोगों का भार वहन करने में असमर्थ हूँ। यह भार मेरे लिए बहुत भारी है। यदि तू मुझसे ऐसा व्यवहार करेगा, तो मुझपर कृपा कर, और अविलम्ब मेरा वध कर दे जिससे मुझे अपनी दुर्दशा अपनी आंखों से देखनी न पड़े।'

मूसा ईश्वर से कहता है कि वह उसे मार दे ताकि बोझ से छुटकारा मिल जाए। हमने पहले देखा था कि ईजाबेल के साथ निपटते समय इलिया को भी इसी तरह का अनुभव हुआ था। जो भी आवास से पूरी तरह दब गया है, वह मूसा के भावों को समझ सकता है; लेकिन ये बातें ईश्वर और उसके निपटारे पर अविश्वास को दर्शाती हैं। मूसा की मदद करने के लिए, ईश्वर ने आदेश दिया:

जन-गणना 11:16 प्रभु मूसा से बोला, 'मेरे लिए इस्राएल के सत्तर धर्मवृद्ध एकत्र कर जिनको तू जानता है कि वे लोगों के धर्मवृद्ध और पदाधिकारी हैं। तू उनको मिलन-शिविर में ला। वहाँ वे तेरे साथ खड़े हों।

फिर भी, ईश्वर की मूल योजना यह नहीं थी कि वह यह सत्तर आदमी को नियुक्त करे। यदि मूसा ने ईश्वर की शक्ति और अच्छाई के प्रमाणों के अनुरूप विश्वास प्रकट किया होता, तो ये सत्तर आदमी कभी चुने नहीं गए होते। उसने यदि पूरी तरह से ईश्वर पर भरोसा किया होता, तो प्रभु उसे लगातार मार्गदर्शन करता और हर आपातकाल के लिए उसे शक्ति देता।

इस प्रक्रिया से उठने वाले पहले मुद्दों में से एक यह था कि आरोन और मिरियम को लगा कि मूसा ने सत्तर वृद्धों को नियुक्त करते समय उनसे परामर्श नहीं किया (संख्या 12)। इससे और अधिक समस्याएँ उत्पन्न हुईं।

फिर प्रभु ने इजराइलियों को मांस का भोजन करने के लिए उनके हृदय की इच्छा दी।

जन-गणना 11:18-20 तू लोगों से यह कह : कल के लिए स्वयं को शुद्ध करो। तुम कल मांस खाओगे, क्योंकि तुमने प्रभु को अपना रोदन सुनाया है और यह कहा है, “कौन हमें मांस खाने को देगा? हमारी दशा मिस्र देश में इससे अच्छी थी।” अतः प्रभु तुम्हें मांस प्रदान करेगा, और तुम खाओगे। तुम एक दिन नहीं, दो नहीं, पांच नहीं, दस नहीं, बीस दिन नहीं, वरन् महीने भर खाओगे, जब तक वह तुम्हारी नाक से बाहर न निकलने लगे, और तुम्हें उससे घृणा न हो जाए; क्योंकि तुमने प्रभु को जो तुम्हारे मध्य में है, अस्वीकार किया, उसके सम्मुख रोदन किया और कहा, “हम मिस्र देश से क्यों निकल आए?”’

भजन संहिता 78:26-29 उसने आकाश में पुरवड़ा बहाई, और अपनी शक्ति से दक्खिनी वायु हांकी। उसने उन पर धूलकण के समान मांस की वर्षा, और सागर तट के बालू के सदृश असंख्य पक्षियों की वर्षा की। उनके शिविरों के मध्य, उनके निवासस्थान के चारों ओर पक्षियों को गिराया। वे उन्हें खाकर तृप्त हुए; **यों परमेश्वर ने उन्हें उनकी लालसा के अनुसार भोजन दिया।**

इसी तरह ईश्वर ने इजराइल के कनान के राजा अराद का वध करने के वचन को सुना। उन्हें वह दिया जो उनके लिए सबसे अच्छा नहीं था, क्योंकि वे चाहते थे। ठीक वैसा ही जो बाद में किया गया जब इजराइल ने एक राजा चाहा जो उन्हें सभी अन्य राष्ट्रों की तरह न्याय करे:

1 शमूएल 8:4-9 इस्राएलियों के सब धर्मवृद्ध एकत्र हुए। वे रामाह नगर में शमूएल के पास आए। उन्होंने शमूएल से कहा, ‘देखिए, आप अब वृद्ध हो गए हैं। आपके पुत्र भी आपके मार्ग पर नहीं चल रहे हैं। इसलिए अन्य राष्ट्रों के समान, आप हमारे लिए भी राजा नियुक्त कीजिए।’ जब उन्होंने कहा, **‘हम पर शासन करने के लिए हमें राजा दीजिए’**, तब शमूएल को उनकी यह बात बुरी लगी। अतः शमूएल ने प्रभु से प्रार्थना की। प्रभु ने शमूएल से कहा, **‘जो बात इस्राएली लोग तुझसे कहते हैं, उसको तू सुन। उन्होंने तुझे नहीं, बल्कि मुझे अस्वीकार किया है कि मैं उन पर राज्य न करूँ।** जिस दिन से मैं उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, उस दिन से आज तक वे अपने सब कर्मों से **मेरा त्याग** करते और अन्य देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करते रहे हैं। ऐसा ही व्यवहार वे तेरे साथ भी कर रहे हैं। **अब तू उनकी बात सुन। तू उन्हें गम्भीरता से सावधान कर। जो राजा उन पर राज्य करेगा, उसके संवैधानिक अधिकार भी उन्हें बता दे।’**

होशे 13:9-11 ओ इस्त्राएल, मैं तुझे नष्ट करूंगा; तेरी सहायता कौन कर सकता है? तुझे बचानेवाला तेरा राजा कहां है? तेरी रक्षा करनेवाले तेरे शासक कहां हैं; जिनके विषय में तूने मुझसे कहा था, 'हमें राजा दे; हमें शासक दे'? मैंने तुझे क्रोध में राजा दिए थे, पर अब मैंने रोष में उन्हें वापस ले लिया।

सत्तर वृद्धों की नियुक्ति और कबूतर भेजने में हम देखते हैं कि ईश्वर इजराइल को वे चीजें दे रहा था जो वे चाहते थे, लेकिन जो उसे जानता था कि उनके लिए सबसे अच्छा नहीं था।

भय की मूर्ति को छोड़ना

यहजकील के माध्यम से ईश्वर यह बहुत अद्भुत घोषणा करता है:

यहेजकेल 14:4-5 तू इन्हें यह बात बता, और इनसे कह, स्वामी-प्रभु यों कहता है, 'इस्राएली कुल का जो व्यक्ति अपने देवता की मूर्ति अपने हृदय में प्रतिष्ठित करेगा, और यों धर्म-मार्ग पर चलने के पूर्व अपने सम्मुख अधर्म के रोड़े डालेगा, और मेरी इच्छा जानने के लिए नबी के पास आएगा, तो उसको मैं अपने ढंग से उत्तर दूंगा : वह अपनी असंख्य मूर्तियों के अनुरूप अपार दण्ड पाएगा। ओ मानव, इस इस्राएली कुल ने अपनी मूर्तियों के कारण मुझे त्याग दिया है, और यह मुझ से दूर हो गया है। जिस हृदय में इस्राएली कुल ने अपने देवताओं की मूर्तियां प्रतिष्ठित की हैं, उस हृदय को मैं अपने दण्ड से आतंकित करूंगा।

यहजकील के अध्याय 14 पर टिप्पणी करते हुए आदम क्लार्क लिखते हैं:

“मैं अक्सर टिप्पणी कर चुका हूँ कि हिब्रू भाषा में यह सामान्य बात है कि ईश्वर द्वारा किए गए काम के रूप में वह बात दर्शाई जाती है जिसे वह सिर्फ सहन करता है या करने की अनुमति देता है; क्योंकि ईश्वर की सरकार इतनी पूर्ण और सार्वभौमिक है कि सबसे छोटा भी घटना उसकी इच्छा या अनुमति के बिना नहीं हो सकती।” (आदम क्लार्क की टिप्पणी)।

हम यह सिद्धांत यहजकील 14 में देखते हैं, जिसके अनुसार ईश्वर लोगों को उनकी मूर्तियों के अनुसार जवाब देता है, और इसे निम्नलिखित स्थिति में लागू किया गया है।

निर्गमन 23:27 मैं तेरे आगे अपना आतंक प्रेषित करूँगा। जिन जातियों पर तू आक्रमण करेगा, उनको मैं भयाकुल करूँगा। तेरे पास से समस्त शत्रुओं को पलायन करने के लिए विवश करूँगा।

कनान के आसपास के सभी देशों के पास ईश्वर का एक ऐसा दृष्टिकोण था जो बदला लेने वाला और हत्यारा था। कुछ देशों के अपने देवताओं को अपने बच्चों की बलि देने का तथ्य यह दर्शाता है कि वे अपने देवताओं के अत्याचारी और हत्यारे स्वभाव को कैसे देखते थे। उदर 23:27 में डर के लिए शब्द का अनुवाद मूर्ति के रूप में किया जा सकता है, जैसा कि यिर्मयाह 50:38 में है।

यिर्मयाह 50:38 उसके जलाशयों पर अकाल की छाया पड़ेगी, और वे सूख जाएंगे; क्योंकि सारा बेबीलोन देश देवताओं की मूर्तियों से भर गया है; लोग घृणित प्रतिमाओं के पीछे पागल हो रहे हैं।

जैसे-जैसे राष्ट्र भय और मौत के देवताओं की पूजा करते थे, ईश्वर ने इजराइल के पाप को इन राष्ट्रों पर लाने की अनुमति दी जिनसे वे डरते थे और जिन पर वे विश्वास करते थे। अज्ञानियों के बारे में बोलते हुए पौलुस कहता है:

रोमियों 1:32 वे परमेश्वर का यह निर्णय जानते हैं कि ऐसे कुकर्म करने वालों का उचित दण्ड मृत्यु है। फिर भी वे न केवल स्वयं ये ही कार्य करते हैं, बल्कि ऐसे कुकर्म करने वालों की प्रशंसा भी करते हैं।

कनानियों के पापों से उत्पन्न अपराध ने उन्हें मौत और विनाश से डरा दिया। जब शैतान ने इजराइल के हृदय को यह विश्वास कराने में सफल हुआ कि ईश्वर चाहता है कि वे लोगों का वध करें, तब उसे इजराइल को इन राष्ट्रों का वध करने का वचन देने के लिए प्रेरित करने में समर्थ हुआ, क्योंकि ईश्वर ने उन्हें सुरक्षा देना बंद कर दिया था क्योंकि उनका अधर्म का प्याला पूरा हो गया था। इस प्रकार, जैसा कि ईश्वर ने भविष्यवाणी की थी, उनकी पूजा करने वाले नकली देवताओं का भय उन पर आ गया। लेकिन यह उन पर आया इजराइलियों के माध्यम से, बल्कि स्वयं-विनाशकारी साधनों से नहीं।

बिना करुणा का न्याय

ईश्वर इजराइल को वह दे रहा था जो वे चाहते थे, इसका एक स्पष्ट चिह्न यह कथन है द्वितीय वेद 7:2 में।

व्यवस्था-विवरण 7:2 जब तेरा प्रभु परमेश्वर उनको तेरे हाथ में सौंप देगा, और तू उन्हें पराजित करेगा, तब तू उन्हें निषिद्ध समझकर पूर्णतः नष्ट कर देना। उनके साथ सन्धि मत करना और न उन पर दया करना।

अपने दुश्मनों को बिना करुणा के पूरी तरह से नष्ट करने का यह निर्देश, जो इजराइल के कल्पित देवता के साथ सामंजस्यपूर्ण था, वह स्वर्ग के ईश्वर का सच्चा प्रतिनिधित्व नहीं करता था। बाइबल कहती है कि न्याय उन्हें दिया जाता है जिन्होंने कोई करुणा नहीं दी है।

याकूब 2:13 जिसने दया नहीं दिखायी है, उसका न्याय दया के साथ नहीं किया जायेगा; किन्तु दया न्याय पर विजय पाती है।

यह श्लोक दो तरीकों से पढ़ा जा सकता है। वे जो कोई करुणा नहीं दिखाते, वे दूसरों को बिना करुणा के न्याय करेंगे, और वे जो कोई करुणा नहीं दिखाते, वे जब न्यायित होंगे तो कोई करुणा नहीं पाएंगे। बिना करुणा के न्याय का यह विचार शैतान के मन का प्रतिबिम्ब है।

शास्त्र यह प्रकट करते हैं कि ईश्वर कभी-कभी करुणामयी होता है:

निर्गमन 34:6 प्रभु उनके सामने से निकला और उसने घोषित किया, 'प्रभु! प्रभु! वह दयालु, और अनुग्रह करने वाला, विलम्ब-क्रोधी, अत्यन्त करुणामय, सत्य परमेश्वर है।

1 इतिहास 16:34 प्रभु की सराहना करो, क्योंकि प्रभु भला है, उसकी करुणा सदा बनी रहती है।

ईश्वर का न्याय कभी भी उसकी करुणा के बाहर नहीं होता। यह शैतान की एक निर्माण है। हम इसे हिब्रू विचार पैटर्न में देखते हैं जिसे *हिब्रॉ पैरालेलिज़म* के रूप में जाना जाता है। नीचे दो बोल्ड शब्द एक जैसे मतलब रखते हैं, जैसे दो अंडरलाइन शब्द।

भजन संहिता 89:14 **धार्मिकता** और न्याय तेरे सिंहासन के मूल हैं; **करुणा** और सच्चाई तेरे आगे-आगे चलती हैं।

जब इजराइल ने ईश्वर को कनान के राजा का वध करने का वचन दिया, तब वे शैतान की आत्मा से प्रभावित थे। वे हर अवसर पर ईश्वर के खिलाफ शिकायत करते और बग़ावत करते रहे थे। ईश्वर ने उन्हें चेतावनी दी और उन्हें अपने आदेशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया:

व्यवस्था-विवरण 4:1 ‘अब, ओ इस्राएल, जो संविधि और न्याय-सिद्धान्त पालन करने के लिए आज मैं तुम्हें सिखाऊंगा, उनको तुम सुनना, जिससे तुम जीवित रह सको और उस देश में प्रवेश कर उस पर अधिकार कर सको, जो तुम्हारे पूर्वजों का प्रभु परमेश्वर तुम्हें दे रहा है।

व्यवस्था-विवरण 8:1 ‘समस्त आज्ञाओं के अनुसार, जिनका आदेश मैं तुझे आज दे रहा हूँ, कार्य करने के लिए तू तत्पर रहना, जिससे तू जीवित रहे और अधिक शक्तिशाली बने, और उस देश में जाकर उसको अपने अधिकार में करे, जिसको प्रदान करने की शपथ प्रभु ने तेरे पूर्वजों से खाई थी।

यहोशुअ 24:11-12 ‘इसके पश्चात् तुमने यर्डन नदी पार की। तुम यरीहो नगर आए। यरीहो नगर के निवासियों ने तथा एमोरी, परिज्जी, कनानी, हित्ती, गिर्गाशी, हिक्वी और यबूसी जातियों ने भी तुमसे युद्ध किया। परन्तु मैंने उन सब को तुम्हारे हाथ में दे दिया। ‘तब मैंने तुम्हारे आगे-आगे बरों का आतंक भेजा, जिन्होंने एमोरी जाति के दोनों राजाओं को तुम्हारे सामने से निकाल दिया। **यह तुमने अपनी तलवार या धनुष के बल पर नहीं किया था।**

2 इतिहास 20:17-23 इस युद्ध में तुम्हें हथियार उठाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। ओ यहूदा प्रदेश के निवासियों तथा यरूशलेम के रहने वालों, तुम पंक्ति बांध कर वहीं खड़े रहना। तब तुम देखना, मैं-प्रभु तुम्हारा किस प्रकार उद्धार करता हूँ।” इसलिए मत डरो, और न ही तुम्हारा हृदय भय से कांपे। कल तुम उनका सामना करने के लिए प्रस्थान करना। देखो, प्रभु तुम्हारे साथ होगा।’ यह नबूवत सुनकर यहोशाफट ने भूमि की ओर सिर झुकाया। उसका मुंह धरती की ओर था। यहूदा प्रदेश के समस्त निवासी तथा यरूशलेम के सब रहने वाले लोग प्रभु की स्तुति करते हुए उसके सम्मुख दण्डवत् करने लगे। कुछ कहात-वंशीय तथा कोरह-वंशीय उपपुरोहित खड़े होकर उच्च स्वर में इस्राएली राष्ट्र के प्रभु परमेश्वर की स्तुति गाने लगे। दूसरे दिन सबेरे यहोशाफट के सैनिक उठे, और वे तकोअ के निर्जन प्रदेश की ओर गए। वे प्रस्थान कर ही रहे थे कि यहोशाफट उनके मध्य में खड़ा हुआ, और उसने उनसे कहा, ‘ओ यहूदा प्रदेश के निवासियों, ओ यरूशलेम के रहने वालों, मेरी बात सुनो: अपने प्रभु परमेश्वर पर विश्वास करो, तब तुम दृढ़ रह सकोगे; प्रभु के नबियों पर भरोसा रखो, तब तुम सफल होगे।’ **तब उसने लोगों से विचार-विमर्श किया, और कुछ गायकों को नियुक्त किया कि वे पवित्र वस्त्र पहिन कर प्रभु का स्तुति-गान करें, और जब सेना प्रस्थान करे तब वे उसके आगे-आगे यह गाएं : “प्रभु की स्तुति करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।”** जब उन्होंने अपने प्रभु परमेश्वर का इस प्रकार स्तुति-गान किया,

तब प्रभु ने यहूदा प्रदेश पर आक्रमण करने वाले अम्मोनी, मोआबी और सेईर के पहाड़ी देश के सैनिकों पर घात लगाकर प्रहार करने वालों को बैठा दिया। अतः वे बुरी तरह पराजित हो गए। उनमें फूट पड़ गई। अम्मोन और मोआब की सेनाओं ने सेईर के पहाड़ी देश के निवासियों पर हमला कर दिया, और उनको पूर्णतः नष्ट कर दिया। जब वे सेईर के निवासियों का पूर्ण संहार कर चुके, तब वे सब आपस में ही लड़ने-झगड़ने लगे, और एक-दूसरे का अन्त कर दिया।

इसलिए जब इजराइल को युद्ध के माध्यम से कनान की भूमि प्राप्त करने की अनुमति मिली, तो यह ईश्वर की मूल इरादा नहीं थी। चूंकि इजराइल लगातार डरता था कि ईश्वर उन्हें मारने की कोशिश कर रहा है और वह उसकी प्रेममयी देखभाल पर संदेह करता था, शैतान को उन्हें ईश्वर के साथ वचन देने के लिए प्रलोभित करने की शक्ति मिली कि कनानियों और अन्य अज्ञानी राष्ट्रों का वध करें। इजराइल को युद्ध में विजयी होने की अनुमति दी गई, लेकिन शैतान ने ईश्वर के स्वभाव के खिलाफ युद्ध जीता। इजराइल अपनी विजय से हार गया और ईश्वर के गलत दृष्टिकोण के गुलाम बन गया।

यीशु के प्रकाश में ईश्वर को देखना

इन आखिरी दिनों में हमें ईश्वर के स्वभाव को जिस तरह से वह वास्तव में है, उसे देखने का अवसर प्राप्त होता है। यीशु मसीह के सामने हम अपने स्वर्गीय पिता की सच्ची इरादाओं को उजागर करना शुरू कर सकते हैं।

योहन 14:8-10 फिलिप ने उन से कहा, “प्रभु! हमें पिता के दर्शन कराइए। हमारे लिए इतना ही बहुत है।” येशु ने कहा, “फिलिप! मैं इतने समय तक तुम लोगों के साथ रहा, फिर भी तुम ने मुझे नहीं जाना? जिसने मुझे देखा है, उसने पिता को भी देखा है। फिर तुम यह क्या कहते हो : ‘हमें पिता के दर्शन कराइए’? क्या तुम विश्वास नहीं करते कि मैं पिता में हूँ और पिता मुझ में है? मैं जो शिक्षा तुम्हें देता हूँ, वह मेरी अपनी शिक्षा नहीं है। मुझ में निवास करने वाला पिता अपने कार्य सम्पन्न कर रहा है।

यीशु “अदृश्य ईश्वर का चित्र” है। (कोलस्सियन 1:15); वही “उसकी महिमा की चमक, और उसके व्यक्तित्व का विशेष चित्र” है। (हिब्रू 1:3)। यीशु ने तलवार से कितने लोगों की हत्या की? उसने आग से कितने जलाए? उसने कितने बच्चों को भाले से चबोया? बिल्कुल कोई नहीं! उन सभी के लिए जो इस विचार को स्वीकार करते हैं कि ईश्वर आया था लोगों की जानें मारने के लिए, यीशु के शब्दों को याद करें:

लूकस 9:55,57 पर येशु ने मुड़ कर उन्हें डाँटा येशु अपने शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे थे कि मार्ग में किसी ने उनसे कहा, “आप जहाँ कहीं भी जाएँगे, मैं आपके पीछे-पीछे चलूँगा।”

जब तक हम यह झूठ मानते रहेंगे कि ईश्वर व्यक्तिगत रूप से उन लोगों को मारेगा जो उसका विरोध करते हैं, तब तक हमें यह मिलेगा कि याकूब के दुःख के समय में यीशु हमारे पास दुश्मन के रूप में आएगा और हम उसका आशीर्वाद पाने से पहले ही छोड़ देंगे। केवल वे लोग जो अपने पिता को वास्तव में करुणामयी पाते हैं, वे ही लड़ाई में टिके रहेंगे और शैतान के झूठ के खिलाफ सील हो जाएंगे कि ईश्वर एक तानाशाह है जिससे हमें डरना चाहिए। याकूब के दुःख की घटनाओं को आवश्यक होगा ताकि मनुष्य की ईश्वर के खिलाफ बुराई पूरी तरह से सामने आ जाए (यिर्मयाह 30:7); यह डर कि जो लोग उसके बारे में अलग विचार रखते हैं, उनके लिए ईश्वर को एक व्यक्तिगत हत्यारे के रूप में कल्पना करता है।

क्या शैतान आपको इजराइल की कनान पर तलवार से विजय के साथ हरा देगा, या आप हमारे करुणामयी पिता को देखेंगे जो लोगों को अपनी इच्छाओं को पाने और अपने अपने मार्ग को पूरा करने की अनुमति देता है? आज चुनें कि आप किसकी सेवा करेंगे; और मेरे और मेरे घर के लिए हम सदा करुणामयी ईश्वर की

सेवा करेंगे, जो निश्चित रूप से अधर्म को नहीं माफ़ करेगा लेकिन गेहूं और गंदे बीजों को कटाई के लिए आने देगा ताकि हर व्यक्ति का हृदय प्रकट हो जाए ।

कनान की विजय

इजराइल द्वारा राष्ट्रों का तलवार से बड़े पैमाने पर वध करने को यीशु के शब्दों के साथ कैसे मेल खाया जाए?

मत्ती 26:52 येशु ने उससे कहा, “तलवार म्यान में कर लो, क्योंकि जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही मारे जाते हैं।”

न केवल पुरुष, बल्कि स्त्रियाँ और बच्चे भी:

व्यवस्था-विवरण 2:34 हमने उस समय उसके सब नगरों पर अधिकार कर लिया और एक-एक पुरुष, स्त्री, बच्चे और नगर को अर्पित समझकर पूर्णतः नष्ट कर दिया। हमने पालतू पशुओं के अतिरिक्त कुछ भी जीवित नहीं छोड़ा।

क्या इजराइली लोग वास्तव में ईश्वर के स्वभाव से अनुरूप थे? वे लगातार क्यों डरते थे कि उन्हें मारने के लिए उन्हें रेगिस्तान में लाया गया है? अब्राहम पर आई गहरी अंधकार का कोई संबंध था कि उसने अपने भतीजे और परिवार को बचाने के लिए तलवार उठाई थी?

लेवी और शिमियों द्वारा शेखमाइटों का वध किसी भी तरह इजराइल के अपने दुश्मनों को पूरी तरह से नष्ट करने के वचन पर प्रभाव डाला?

क्या आपको जानना चाहिए? अगर नहीं, तो क्या यीशु आपके पास याकूब की तरह दुःख में आएगा और दुश्मन के रूप में माना जाएगा? केवल ईश्वर की करुणा पर भरोसा करके ही याकूब ने जैसे ईश्वर का सच्चा इजराइल जीत पाया।